आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2259 • उदयपुर, सोमवार 01 मार्च, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

आखिर क्यों और कैसे टूटते हैं ग्लेशियर

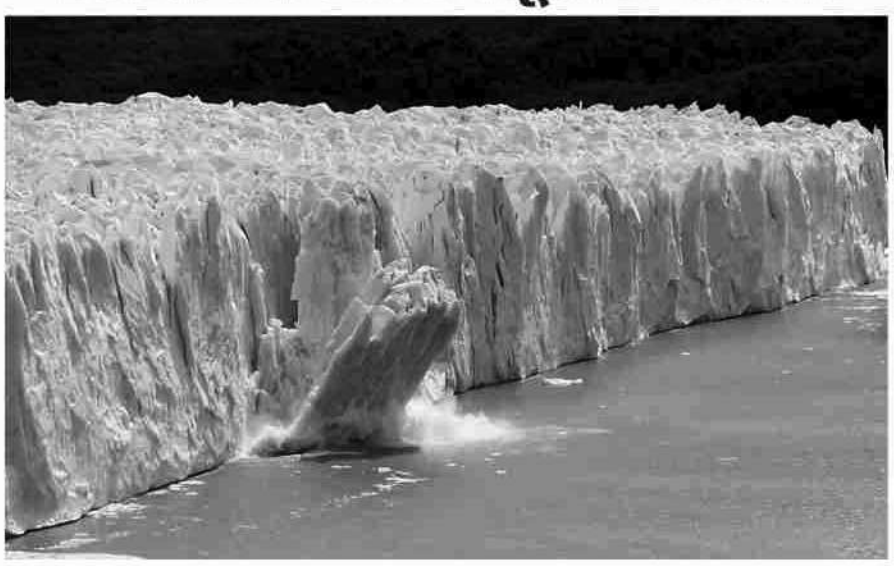

ग्लेशियर सालों तक भारी मात्रा में बर्फ के एक जगह जमा होने से बनता है। ये दो तरह के होते हैं– अल्पाइन ग्लेशियर और आइस शीट्स। पहाड़ों के ग्लेशियर अल्पाइन श्रेणी में आते हैं। पहाड़ों पर ग्लेशियर टूटने की कई वजहें हो सकती हैं। गुरुत्वाकर्षण की वजह से और दूसरे ग्लेशियर के किनारों पर तनाव बढ़ने से। ग्लोबल वॉर्मिंग के चलते बर्फ पिघलने से भी ग्लेशियर का एक हिस्सा टूटकर अलग हो सकता है। जब ग्लेशियर से बर्फ का कोई टुकड़ा अलग होता है तो उसे काल्विंग कहते है।

पेयजल का बड़ा स्रोत– ग्लेशियर पृथ्वी पर पेयजल का सबसे बड़ा स्रोत है। सालभर पानी से लबालब रहने वाली नदियां अमूमन ग्लेशियर से ही निकलती है। गंगा का प्रमुख स्रोत गंगोत्री ग्लेशियर है।

ऐसे आती है ग्लेशियर बाढ़– ग्लेशियर फटने या टूटने से आने वाली बाढ़ का नतीजा बेहद भयानक हो सकता है। ऐसा आमतौर पर तब होता है जब ग्लेशियर के भीतर ड्रेनेज ब्लॉक होती है। पानी अपना रास्ता ढूंढ लेता है, जब ग्लेशियर के बीच से बहता है तो बर्फ पिघलने की दर बढ़ जाती है। उसका रास्ता बड़ा होता जाता है व बर्फ भी पिघलकर बहने लगती है।

मोबाइल और लेपटॉप की अब बढ़ेगी उम्र

बिजली आपूर्ति में उतार–चढ़ाव के कारण अब मोबाइल, लेपटॉप और टेबलेट के जल्द खराब होने का खतरा कम हो जाएगा। भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) जोधपुर और आइआइटी मंडी के शोधकर्ताओं ने इनमें इस्तेमाल होने वाले सूक्ष्म सर्किट के कार्य विश्लेषण का नया सिद्धांत तैयार किया है। इससे इनकी उम्र बढ़ जाएगी। आइआइटीज के शोधकर्ताओं ने ट्रांजिस्टर की मैट्रिक्स थ्योरी और क्लोज्ड फॉर्म का इस्तेमाल कर नया इलेक्ट्रॉनिक सर्किट सिद्धांत तैयार किया है। हाल ही में यह शोध पत्र आइईईई के ओपन जर्नल ऑफ सर्किट एंड सिस्टम में प्रकाशित हुआ है। आइआइटी जोधपुर के डॉ. जयनारायण त्रिपाठी और आइआटी मंडी के डॉ. हितेश श्रीमाली व उनके रिसर्च स्कॉलर विजेंद्र कुमार शर्मा ने मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एक प्रोजेक्ट के अंतर्गत यह शोध किया है।

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

संस्थान द्वारा पुणे में कृत्रिम अंग माप शिविर

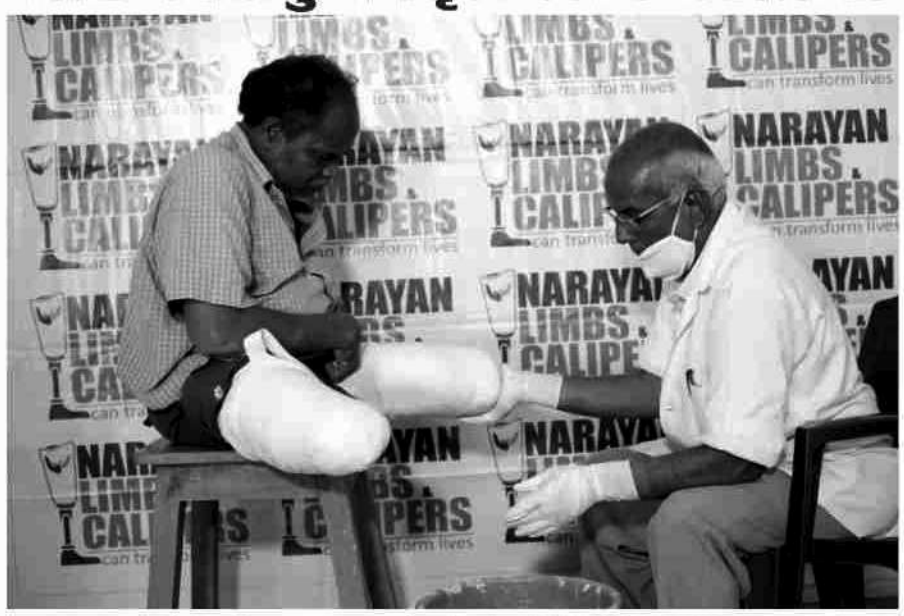

नारायण सेवा संस्थान द्वारा पुणे में कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता गोड़वाड़ शिरवी क्षत्रिय समाज पुणे द्वारा आयोजित शिविर में 20 दिव्यांगों भाई–बहनों के कृत्रिम हाथ–पैर माप लिया गया, 2 कैलिपर वितरण किये गये। शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् हीरालाल जी राठौड, अध्यक्ष श्रीमान हकाराम जी राठौड़, विशिष्ट अतिथि श्रीमान् रताराम जी, श्रीमान अर्जुन जी, श्रीमान सोमाराम आदि कई मेहमानगण उपस्थित थे। शिविर में दिव्यांगों के साथ आए परिजनों के चेहरे पर एक अलग खुशी देखने को मिली। शिविर प्रभारी सुरेन्द्र सिंह जी, लोगर जी डांगी, श्री अनिल जी पालीवाल ने अपनी सेवाएं दीं।

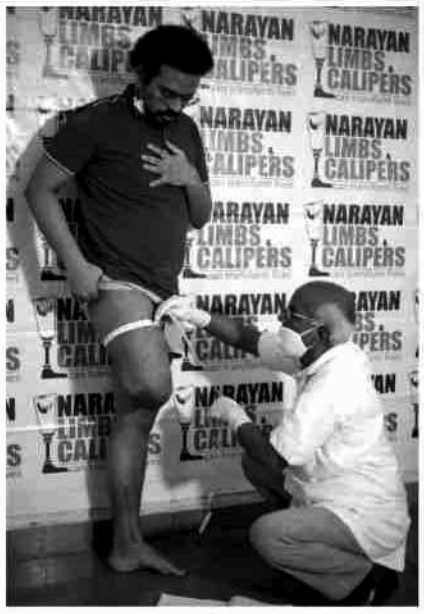

दिव्यांग भी कर सकते हैं बड़ा काम

आंकड़ों के लिहाज से भारत में करीब दो करोड़ लोग शरीर के किसी विशेष अंग से दिव्यांगता के शिकार हैं। दिव्यांगजनों को मानसिक सहयोग की जरूरत है। यदि समाज में सहयोग का वातावरण बने, लोग किसी दूसरे की शारीरिक कमजोरी का मजान उड़ाएं, तो आगे आने वाले दिनों में हमें सारात्मक परिणाम देखने को मिल सकते हैं। समाज के इस वर्ग को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराया जाये तो वे कोयला को हीरा भी बना सकते हैं। समाज में उन्हें अपनत्व–भरा वातावरण मिले तो वे इतिहास रच देंगे और रचते आएं हैं। एक दिव्यांग की जिंदगी काफी दुःखों भरी होती है। घर–परिवार वाले अगर मानसिक सहयोग न दें, तो व्यक्ति अंदर से टूट जाता है। वैसे तो दिव्यांगों के पक्ष में हमारे देश में दर्जन भर कानून बनाए गए हैं, यहां तक कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण भी दिया गया है, परंतु ये सभी चीजें गौण हैं, जब तहम उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना बंद ना करें। वे भी तो मनुष्य हैं, इश्वयार और सम्मान के भूखे हैं। उन्हें भी समाज में आम लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी है। उनके अंदर भी अपने माता–पिता, समाज व देश का नाम रोशन करने का सपना है। बस स्टॉप, सीढियों पर चढने–उतरने, पंक्तिबद्ध होते वक्त हमें यथासंभव उनकी सहायता करनी चाहिए।

आइए, एक ऐसा स्वच्छ माहौल तैयार करें, जहां उन्हें क्षणिक भी अनुभव ना हो कि उनके अंदर शारीरिक रूप से कुछ कमी भी है। नारायण सेवा संस्थान परिवार की अपील है कि दिव्यांगों का मजाक न उड़ाएं, उन्हें सहयोग दें। साथ ही उनका जीवन स्तर उपर उठाने में संस्थान के प्रकल्पों में मदद भेजकर स्वयं सहयोगी बनें... एक उदाहरण पेश करें अपने परिवार में... समाज में.... संस्कारों से... ।

मानवता में ही पूर्णता निहित है

कर्त्तव्य परायण मनुष्य ही सच्चा ईमानदार है और जो ईमानदार है वही सच्चा त्यागी है। ईमानदार की गैरियत भी मिट जाती है, यानी कर्त्तव्य परायण मनुष्य को ही असंगता और प्रेम की प्राप्ति होती है, और जो कर्त्तव्य परायण है वही सच्चा मानव है। बहुत धनी होना, वस्तुएं अधिक होना, ऊंचा पद प्राप्त होना तथा संसार में मान प्राप्त होना अथवा अपनी ख्याति बढ़ जाना अथवा बहुत बलवान तथा विद्वान होना मानवता नहीं है।

मनुष्य का ईमानदार होना ही सच्ची मानवता है। देखो! सुन्दर .तियों से भी मानवता नहीं आती है। परिस्थिति अनुकूल होने में भी मानवता नहीं है। मनुष्य के जीवन से बेईमानी का निकल जाना ही मानवता है। मानवता अपनाने पर ही जीवन में निर्मलता आती है, और निर्मल जीवन ही निर्विकार जीवन है, जीवन से ही प्रेम का प्रादुर्भाव होता है। देखो, जो सच्चा मानव है, वह उस अनन्त का दुलारा है। मानव के आगे वह निर्विशेष हाथ बांधे खड़ा है और वह ब्रह्म मानव की गोद में ही खेलता है यानी मानव के लिए वह सब कुछ करने को और सब कुछ बनने को तैयार रहता है।

देखो जो मनुष्य सच्चा मानव हो जावे, वह चाहे भगवान को नहीं भी माने तो भी वह उस अनन्त की तरफ से बिना मांगे उसकी मांग पूरी होती रहती है; और मानवता आये बिना रात–दिन पुकारते रहने पर भी और वेदों द्वारा प्रार्थना करते रहने पर भी उसकी मांग पूरी नहीं होती। सो, मानवता इतने महत्त्व की चीज है और वह मानवता हमें हर परिस्थिति में बड़ी सुगमतापूर्वक मिल सकती है।

असल में मानवता प्राप्त करने के लिए ही हमें यह मनुष्य जन्म मिला है और मनुष्य जन्म में ही मानवता की प्राप्ति हो सकती है। यदि मानवता प्राप्त किए बिना ही शरीर हाथ से निकल गया तो, फिर भारी पछताना पड़ेगा इसलिए मानवता प्राप्त करों। मानवता में ही पूर्णता निहित है।

कबीर मन निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।
पीछे पीछे हरि फिरत कहते कबीर कबीर ।।

संगठन से प्रगति

संगठनात्मक एकता विजय और कार्यसिद्धि का मूल मंत्र है। दिव्य प्रतिभाओं का एकीकरण लोक कल्याणकारक है। संसार के समस्त श्रेष्ठ कार्य एकात्मभाव से ही सिद्ध होते हैं। अतः सबको साथ लेकर चलें। किसी भी कार्य को सफलता के लिए एकजुट होना आवश्यक है। संगठन की ताकत एकता में है। संगठनात्मक एकता समाज एवं देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचा देती है। मनुष्य के जीवन में संगठन का बड़ा महत्त्व है। अकेला मनुष्य शक्तिहीन है, जबकि संगठित होने पर उसमें शक्ति आ जाती है। संगठन की शक्ति से मनुष्य बड़े से बड़े कार्य भी आसानी से कर सकता है। संगठन में ही मनुष्य की सभी समस्याओं का हल है। जो परिवार और समाज संगठित होता है, वहां हमेशा खुशियां और शांति बनी रहती है और ऐसा देश तरक्की के नित नए सोपान तय करता है। इसके विपरीत जो परिवार और समाज असंगठित होता है, वहां आए दिन किसी न किसी बात पर झगड़े होते रहते है, जिससे वहां हमेशा अशांति का वातावरण बना रहता है। संगठित परिवार, समाज और देश का कोई भी शत्रु कुछ नहीं बिगाड़ सकता, जबकि असंगठित होने पर शत्रु जब चाहे हावी को सकता है। संगठन का प्रत्येक क्षेत्र में विशेष महत्त्व होता है, जबकि बिखराव किसी भी क्षेत्र में अच्छा नहीं होता है। संगठन का मार्ग ही मनुष्य की विजय की विजय का मार्ग है। यदि मनुष्य किसी गलत उद्देश्य के लिए संगठित हो रहा है, तो ऐसा संगठन अभिशाप है, जबकि किसी अच्छे कार्य के लिए संगठन वरदान साबित होता है। प्रत्येक धर्म ग्रंथ संगठन और एकता का संदेश देते है। कोई भी धर्म आपस में बैर करना नहीं सिखाता।

सभी धर्मो में कहा गया है कि मनुष्य को परस्पर प्रेमपूर्वक वार्तालाप करना चाहिए। मनुष्य जब एकमत होकर कार्य करता है तो संपन्नता और प्रगति को प्राप्त करता है। संगठन में प्रत्येक व्यक्ति का विशेष महत्त्व होता है। इसलिए, जब मनुष्य संगठित होकर कोई कार्य करता है तो उसके परिणाम में विविधता देखने को मिलती है। जिस तरह प्रत्येक फूल अपनी–अपनी विशेषता और विविधता से किसी बगीचे को सुंदर व आकर्षित बना देते है, उसी तरह मनुष्य भी अपनी–अपनी विशेषता और योग्यता से किसी भी कार्य को नया आयाम प्रदान कर सकते हैं।

महिलाओं के हुनर को दिलाई नई पहचान

सीमांत के वे गांव, जहां महिलाओं का बंदिश के बिना बाहर निकलना चलन में नहीं है। ऐसे इलाकों में एक नाम गूंजता है लता बहिन जी...। अपनी उम्र रेगिस्तान को दे चुकी लता कच्छवाह ने न केवल कशीदाकारी के हुनर को दाम दिए है, बल्कि महिलाओं को सुख–दुःख की भागीदारी भी बनी है। जोधपुर में जन्मी लता सामाजिक कार्य की ललक के चलते बाड़मेर आ गई। आज वह 671 स्वयं सहायता समूह के जरिए रोजगार दे रही है।

देशभर में नारायण सेवा संस्थान की शाखाएं

जबलपुर
आर. के. तिवारी,मो. 9826648133
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी,माधोतल, जिला - जबलपुर (म.प्र.)

कोरबा
श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला-कोरबा (छ.ग.)

मुम्बई
श्री कमलचन्द लोढ़ा,मो. 08080083655
दुकान नं 660, आर्किडसिटी सेन्टर,द्वितीय मंजिल, बेस्ट डिपो के पास, बेलासिस रोड़, मुम्बई सेन्ट्रल (ईस्ट) 400008

जुलाना मण्डी
श्रीराम निवास जिन्दल,
श्री मनोज जिन्दल मो. 9813707878,108 अनाज मण्डी, जुलाना,जींद (हरियाणा)

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

शाहदरा शाखा
विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा,ईस्ट दिल्ली

हापुड़ (उ.प्र.)
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल,मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा-311001 (राज.)

अम्बाला केन्ट
श्री मुकुट बिहारी कपूर ,मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केंन्ट, अम्बाला केन्ट-133001(हरियाणा)

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,मो. 09828242497
5-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012 (राजस्थान)

अजमेर
सत्य नारायण कुमावत
मो. 9166190962,कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज,किशनगढ़, जिला अजमेर (राज.)

पाली/जोधपुर
श्री कान्तिलाल मूथा,मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़ (राज.)

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग,मो. 9996990807,गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

रतलाम
चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम (म.प्र.)

सिरसा, हरियाणा
श्री सतीश मेहता मो. 9728300055
म.न.-705, से.-20,पार्ट-द्वितीय,सिरसा, हरि.

नांदेड़ (सेवा प्रेरक)
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला - नांदेड़, महाराष्ट्र

पाचोरा (महाराष्ट्र)
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मन्दसौर
मनोहर सिंह देवड़ा
मो. 9758310864,म.नं. 153, वार्ड नं. 6, ग्राम-गुराड़िया,पोस्ट-गुराड़ियादेदा, जिला - मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

डोडा
श्री विक्रम सिंह व नीलम जी कांतवाल
मो. 09419175813, 08082024587
ग्वाड़ी, उदराना, त. भद्रवा, डोडा (ज.क.)

चुरु
श्री गोरधन शर्मा,मो. 09694218084,गाँव व पोस्ट - झांथड़ा, त. तारानगर, चुरू-331304 (राज.)

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना,मो. 09425050136
A-3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड़ जिला - भोपाल (म.प्र.)

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,मो. 9887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514,
लेडिज फैशन पॉईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर (राज.)

नई दिल्ली
श्री आदेश गुप्ता, मो.9810094875, 9899810905
मकान नं. : ए-141, लोक विहार, पितमपुरा, नॉर्थ वेस्ट दिल्ली

आकोला
हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला (महाराष्ट्र)

पलवल
वीर सिंह चौहान मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर-14, पलवल (हरि.)

बरैली
कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला - बरैली- (उ.प्र.)

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन,मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग (झारखण्ड)

परभणी (महाराष्ट्र)
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

खरसिया
श्री बजरंग बंसल,मो.-09329817446
शान्ति ड्रेसेज, नियर चन्दन तालाब शनि मन्दिर के पास,खरसिया (छ.ग.)

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो.-09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

नरवाना(हरियाणा)
श्री धर्मपाल गर्ग,मो.-09466442702,
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग मो.-9728941014
165-हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी नरवाना,जीन्द

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

सुमेरपुर (राज.)
श्री गणेश मल विश्वकर्मा,मो. 09549503282
अंचल फाउण्डरी, स्टेशन रोड़, सुमेरपुर, पाली

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,मो. 9829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी चित्तौड़ रोड़, बून्दी (राज.)

कैथल
श्री सतपाल मंगला,मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर (छ.ग.)

बालोद
बाबूलाल संजय कुमार
जैन मो. 9425525000,रामदेव चौक बालोद, जिला-बालोद (छ.ग.)

मथुरा
श्री दिलीप जी वर्मा
मो. 08899366480
1, द्वारिकापुरी,कंकाली, मथुरा (उ.प्र.)

धनबाद(झारखण्ड)
श्री भगवानदास गुप्ता-09234894171
07677373093 गांव-नापो खुर्द,पो.-गोसाईं बलिया,जिला-हजारीबाग (झारखण्ड)

मुम्बई
श्री प्रेम सागर गुप्ता ,मो. 9323101733
सी-5, राजविला, बी.पी.एस. 2 क्रोस रोड़,वेस्ट मुलुंड, मुम्बई

बरैली
विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरैली (उ.प्र.)

दीपका, कोरबा (छ.ग.)
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

हाथरस (उ.प्र.)
श्री दास बृजेन्द्र,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा,मो.-09024749075,
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर (राज.)

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिघरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040 (हिमाचलप्रदेश)

हमीरपुर
श्री रसील सिंह मनकोटिया ,मो. 09418061161
जामलीधाम, पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

झारखण्ड
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी,मो. 7992262641,
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट
राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़ (झारखण्ड)

सम्पादकीय

बोली–चाली में अक्सर यह कहा–सुना जाता है कि मानव जीवन एक बार ही मिलता है। यह बात आंशिक तो सत्य है पर पूर्णतः सच नहीं कही जा सकती है। सच तो यह है कि जीवन तो हर रोज, हर पल नया–नया मिलता ही रहता है। हाँ, जीवन में मृत्यु केवल एक बार ही आती है। हमें तो जीवन को देखना है, मृत्यु को क्या देखना? हमारा जीवन, हमारे विचार, हमारी शिक्षा, हमारे अनुभव निरंतर बदलते रहते हैं, यही जीवन की खूबसूरती भी है। हम यदि अपने परिवर्तनों को सकारात्मकता से ग्रहण करते रहेंगे तो प्रतिपल ताजगी भरा जीवन जीने की कला स्वतः आने लगेगी। हम जीवन को देखें, मृत्यु को सोचकर नकारात्मक न बनें। हमारा जीवन यदि श्रेष्ठ होगा तो मौत भी शानदार ही हो जायेगी।

कुछ काव्यमय

मृत्यु और जीवन के अहसास
हमारी करनी को
हर हाल में प्रभावित करते हैं।
हम जीते तो हर पल
हर दिन हैं
पर केवल एक बार मरते हैं।
इसलिये मृत्यु नहीं जीवन जीयें।
विष छोडे, अमृत पीयें।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

घिसट घिसट कर संस्थान में आया लौटते वक्त अपने पैरों पर खड़ा था

सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के गांव भाबसी निवासी श्री धर्मवीर सिंह के पुत्र अर्पित जन्म से ही एक पांव में घुटनों से नीचे तक दिव्यांग था। गरीबी के कारण न उसका इलाज हो सका और न ही उसे पढ़ने के से भेजा जा सका। माता– पिता बच्चे की इस हालत और उसके भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहते। घर का माहौल हर समय उदासी से भरा रहता था। धर्मवीर बताते हैं एक दिन उन्हें किसी परिचित में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों की निःशुल्क चिकित्सा, कृत्रिम अंक लगाने और सहायक उपकरण दिये जाने की जानकारी दी। उसके बाद वे बेटे को लेकर उदयपुर आए और संस्थान के डॉक्टर से मिले जिन्होंने दिलासा देते हुए कहा कि आप बेटे को गोद में उठा कर लाए है किंतु वह अपने पांव पर खड़ा होकर चलते हुए अपने घर में प्रवेश करेगा। कुछ दिनों के इलाज के बाद उसे विशेष कैलीपर पहनाया गया। अर्पित जब पिता के साथ पुनः अपने घर के लिए रवाना हुआ तब यह संस्थान के अस्पताल से चलते हुए ही बाहर निकला। पिता ने कहा मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब इसके लिए मैं वो सब – कुछ करूंगा जिसका सपना देखा करता था।

अपनों से अपनी बात

ताकत दें सेवा के मन को

पढ़ने में आया था– महाराणा रणजीत सिंह जी एक बार अपने साथियों के साथ जब कहीं भ्रमण पर जा रहे थे, कि अचानक एक ढेला उनके कन्धे पर आकर लगा। तुरंत सैनिक दौड़ पड़े, और एक बुढ़िया को पकड़ लाये जो दंड की आशंका से थर–थर काँप रही थी। रोती हुई सी हाथ जोड़े उस मांई ने बताया –महाराज जी ! मैंने तो आम तोड़ने के लिए वृक्ष पर पत्थर मारा था। गजब हो गया–आपके लग गया। अब जो भी दंड.....।

दयालु महाराज ने राज्य कोष से उसके घर पर जीवन यापन का सामान भिजवाया। आश्चर्यचकित से हुए अपने दरबारियों को कहा –"देखो भाई ! जब एक वृक्ष भी ढ़ेला मरने पर अपने प्राणतत्त्व युक्त मीठा फल प्रदान कर

देता है, तो फिर मैं तो मानव हूँ.....और फिर उस बेचारी मांई ने जानबूझ कर तो नहीं मारा था न ?"

है नहीं मुमकिन कि जीते,
शक्ति से एक व्यक्ति भी।
प्यार के दो बोल बोलो,
चाहो तो दुनियां जीत लो।।

बहुत सरल है प्यार बढ़ाना –घृणा बढ़ाना अवश्य कठिन है। क्योंकि वह मानव के स्वाभाविक गुण के विपरीत है, और फिर हमारे इस प्रिय भारत देश में तो पूरी थाती है प्रेम, त्याग, सेवा, परोपकार, दयालुता व उदारता आदि की। हजारों महापुरुषों के जीवन्त उदाहरण हैं जिन्होंने इन्हीं गुणों से पूरे विश्व को अमर धरोहरें प्रदान की है – तिल–तिल जल कर..... क्षण–क्षण जी कर।

क्या सुन्दर कहा एक कवि ने :–

ईश्वर को नापसंद है,
शक्ति जुबान में,
इसलिए तो नहीं दी है,
हड्डी जुबान में।

आइए बन्धुओं मजबूत करें नारायण सेवा को अर्थात परोपकार के रचनात्मक कार्यों को। ताकत दें सेवा के मन को अर्थात सात्विक विचारों के प्रसार को, और दुंदुभी बजा दें –प्यार की पवित्रता की करुणा व स्नेह की।

– कैलाश 'मानव'

चूहे का भय

एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे एक बिल था, जिसमें एक चूहा रहता था। वह बिल्ली के डर से अपने बिल में डरा–सहमा सा रहता था एवं अतिआवश्यक काम होने पर ही बिल से बाहर जाता था। वह जब भी बाहर जाता तो, अपने किसी साथी को साथ लेकर बाहर जाता था।

एक बार उसे किसी काम से बाहर जाना था, परंतु उस समय उसका कोई भी साथी उसके पास नहीं था। उसने अपनी यह समस्या एक अनजान चूहे को बताई। वह उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गया। अनजान चूहे को उसके साथ रहकर ज्ञान हो गया कि वह चूहा कुछ ज्यादा ही डरा हुआ रहता है। अनजान चूहे ने उससे कहा– तुम इतने डरे हुए क्यों रहते हो? क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूँ?

मैं बिल्लियों से बहुत डरता हूँ –उसने उत्तर दिया।

अनजान चूहे ने पेशकश की – मेरे पास कुछ ऐसी शक्तियाँ हैं जिनसे मैं तुम्हारा रूप बदलकर तुम्हें बल्ली बना सकता हूँ। उसकी यह बात सुनकर डरपोक चूहा बहुत खुश हो गया और स्वयं को बिल्ली बनवाने का आग्रह करने लगा। अनजान चूहे ने उसे बिल्ली बना दिया। अब वह बिना डर के बाहर आ–जा सकता था तथा अपने साथियों के साथ खेल–कूद कर सकता था। अब उसे किसी का डर नहीं था। कुछ दिन तो सब कुछ अच्छा रहा, परंतु एक दिन उसके पीछे कुत्ते पड़ गए।

अब उसे कुत्तों का डर सताने लगा। वह पुनः अनजान चूहे के पास गया और अपना दुखड़ा रोने लगा। अनजान चूहे को उस पर दया आ गई और उसे कुत्ता बना दिया। चूहे से कुत्ता बनकर वह बहुत बलवान हो गया, लेकिन जैसे ही वह जंगल में पहुँचा तो, शेर उसे खाने के लिए उसके पीछे पड़ गया। अब वह शेर से डरने लगा। वह फिर से अनजान चूहे के पास गया और चूहे ने उसे शेर बना दिया। चूहे को लगने लगा कि अब उसे किसी का डर नहीं लगेगा क्योंकि वह जंगल का राजा जो बन गया था। शेर बनकर वह जैसे ही जंगल में गया तो उसके पीछे शिकारी पड़ गए। बहुत मुश्किल से वह अपनी जान बचाकर आया। अब तो उसे और भी अधिक डर लगने लगा, क्योंकि वह जब भी बाहर जाता, शिकारी उसके पीछे पड़ जाते। ऊपर से बड़ा शरीर होने के कारण, उसे छुपाने में भी समस्या आती।

दुःखी होकर वह पुनः उस चूहे के पास गया और अपनी आप बीती सुनाई। तब अनजान चूहे ने कहा –मैं अपनी समस्त शक्तियाँ लगाकर तुम्हें कुछ भी बना दूँ तो भी तुम्हारी सहायता कोई नहीं कर सकता है। तुम जो चाहे बन जाओ, परंतु तुम्हें डर फिर भी लगेगा, क्योंकि तुम्हारा डर तुम्हारे दिल से जुड़ा है तथा तुम्हारा दिल हमेशा डरपोक चूहों वाला ही रहेगा।

मैं उसे अपनी शक्तियों से भी नहीं बदल सकता हूँ। उस डर को तुम्हें खुद ही खत्म करना होगा। अपने डर पर हमें खुद ही जीत प्राप्त करनी होगी। यही जीवन का मूल मंत्र है।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

ऐसी कठिन परिस्थितियों के दिनों में ही एक दिन वह अपने एक परिचित को लेने हवाई अड्डे गया। वे अपने मकान हेतु मार्बल खरीदने उदयपुर आये थे, नारायण सेवा की भी सहायता करने का उनका मन था। ऐसा संकेत उन्होंने कैलाश को दिया था। एयरपोर्ट पर कैलाश को देखते ही वे पूछ बैठे कि उसके चेहरे की रंगत क्यूं उड़ी हुई है, कैलाश ने कहा – ऐसी कोई बात नहीं है, होगी भी तो भगवान है, वहीं जाने कैसे क्या चलाना है।

कैलाश की बातों में पीड़ा और लाचारी सहज झलक रही थी। वे मार्बल खरीदने के लिए अपने साथ चार लाख रु. लाये थे, सोचा था इसमें से 25 हजार रु. नारायण सेवा को दे देंगे। कैलाश की बातें सुन उन्होंने मार्बल खरीदना टाल दिया और पूरे के पूरे चार लाख कैलाश के हाथों में दे उसे अपना काम आगे बढ़ाने को कहा। कैलाश ने मुसीबत की इस घड़ी में हुई इस कृपा को उस व्यक्ति के रूप में साक्षात भगवान का आना ही समझा।

उन्हीं दिनों जसवन्तगढ़ में शिविर चल रहा था। प्रसिद्ध जैन संत पुष्कर मुनि व देवेन्द्र मुनि को भी शिविर में आमंत्रित किया गया था। शिविर में लगभग 4000 वनवासियों ने भाग लिया था।

अंश-194

किशमिश है लाभकारी

अंगूर को सुखाकर किशमिश बनाया जाता है इसलिए इसमें वो सभी गुण पाए जाते हैं जो अंगूर में होते हैं। किशमिश का इस्तेमाल मुख्य रूप से मिठाई, खीर, और दूसरी चीजों को सजाने या स्वाद के लिए किया जाता है। पर यह एक बेहतरीन स्वाद के अलावा ये सेहत का भी खजाना है।

फायदे

- किशमिश में कार्बोहाइड्रेड और फाइबर पाया जाता है।
- किशमिश को तुरंत खाने से कब्ज से राहत मिलती है।
- किशमिश खाने से ह्रदय की दुर्बलता भी दूर होती है। किशमिश आंखों की रोशनी को भी बढ़ाता है।
- किशमिश खाने से शरीर से खून की कमी दूर होती है। साथ ही एनिमिया रोग को ठीक करता है। जिन्हें लंबे समय से खांसी है उन्हें किशमिश रोज खाना चाहिए। इसके अलावा फेफड़े की टीबी में भी किशमिश लाभकारी है।
- किशमिश खाने से वजन भी बढ़ता और कमजोरी दूर होती है।

आंवले के बीज का पेस्ट लगाने से नकसीर मे आराम

आंवले का फल ही नहीं बीज भी गुणकारी होता है। नाक से खून बहने यानी नकसीर में इसका पेस्ट लगाने से आराम मिलता है। आंवले के बीजों को घी में फ्राई कर लें फिर इसे पानी के साथ पीसकर माथे पर लेप की तरह लगाएं। आंखों में खुजली, जलन, लालिमा होने पर भी आंवले के बीज को पीसकर आंखों को ऊपर और नीचे लगाने से फायदा मिलता है। इसका रस भी रोज सुबह खाली पेट पीना फायदेमंद होता है।

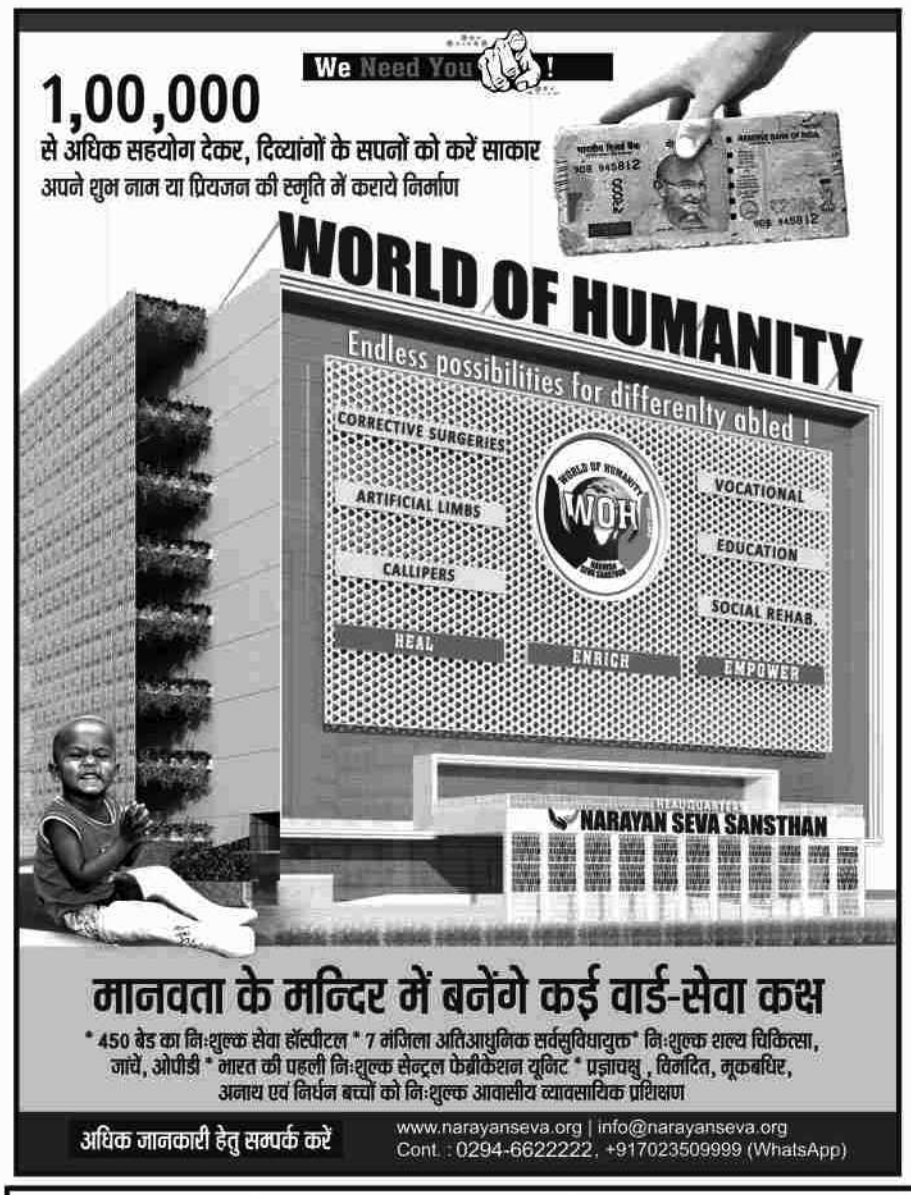

अनुभव अमृतम्

अज्ञान से भी व्यक्ति ठगा जाता है। मन में ये भी था कि कुवांरिया की गाड़ी आगे निकल गई होगी तो मैं कहाँ रहूंगा। मेरे को तो कोई नहीं जानता। होटल में खाना खाने लायक पैसे भी नहीं है। कोई धर्मशाला का भी मालूम नहीं है।

यों तो हम सब है मुसाफिर, ठहरना इक रात का
क्या पता कब मिलें हम, जान लो पहचान लो।

जानने पहचानने की क्षमता। मैंने कहा ठीक है। आठ आना की जगह चार आना ले लेना, तो बोला नहीं भाया, नहीं मैं तो चालूं। तेरी ट्रेन निकल जाये तो मुझे पता क्या ? भाई साहब रूको, रूको, आठ आना ही ले लो। तो मेरे को ठग लिया, और कई बार ठगी हुई है। ये भी ठगी है। पीछे बैठ गया, और साइकिल चलाई। थोड़ी दूर गये, और कुंवारिया रेलवे स्टेशन आ गया, और बोले ले भाई उतर, और लाव आठ आना दे। ये तो नजदीक है। ज्यादा दूर भी नहीं है, और आठ आना दिया मजबूरी से। दुःख तो हुआ। कैलाश नाम के बालक से कुल पुंजी दो रुपये की बहुत–बहुत सम्भाल के रखता था। उसमें से भी पचास पैसा ठगा गये। अभी तक तो यात्रा पूरी बाकी है। टिकिट लिया, और कुंवारिया रेलवे स्टेशन पर पूछा गाड़ी कब आयेगी? बोला 15 मिनिट बाद आयेगी और गाड़ी आयी। गाड़ी आयी छुक–छुक गाड़ी आयी, और गाड़ी में बैठा।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 74 (कैलाश 'मानव')

नरेन्द्र चल पड़ा

झालावाड़ के रहने वाले नरेन्द्र कुमार मीणा ने एक्सीडेंट में भले ही अपना पांव खो दिया हो लेकिन जिदंगी में आगे बढ़ने का हौसला पूरी तरह कायम है। वे कहते हैं– मैं नरेन्द्र कुमार मीणा हूँ मैं झालावाड़ राजस्थान का रहने वाला हूँ। मैं दोस्त के साथ कहीं जा रहा था दुर्घटना में अचानक डिवाईडर से टकराने के कारण मेरा पैर कट गया।

मैंने टी. वी में नारायण सेवा संस्थान का नाम सुना था। मैं मेरे भाई के साथ यहां आया। आज यहां पर नारायण सेवा संस्थान में मेरा पैर लगाया गया है। इससे अब मैं अपने घर का खर्चा चला सकता हूं और खुद का खर्चा भी चला सकता हूं। और अपने परिवार का पालन– पोषण कर सकता हूं। संस्थान ने नरेन्द्र को निःशुल्क पाँव लगाकर उसकी जिंदगी को एक नयी दिशा दी है। अपनी नई जिदंगी के लिये वो संस्थान को बहुत – बहुत धन्यवाद देता है। ये दुनिया का ऐसा पहला संस्थान है, जहां बिल्कुल फ्री इलाज होता है। ऐसा संस्थान मैंने कही और नहीं देखा। नारायण सेवा संस्थान का दिल से बहुत – बहुत धन्यवाद।

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023